भरहुत में आकृतियां प्रमुख रूप में उल्लेखनीय हैं:—
बुद्ध दर्शन को जाते नरेश व घोड़ो के रथ पर सवारियो का दृश्य
1. बुद्ध के उष्णीय पुजा का दृश्य।
2. नागराज ऐरावत द्वारा बोधि वृक्ष की पुजा।
3. मृग जातक
4. भरहुत के शिल्प में बुद्ध की मानवाकृतियां नहीं मिलती हैं उसके स्थान पर चरणचिह्न छत्र चक्र पादुका आदि प्रतीक उकेरे गये हैं। भरहुत की कला में सांची जैसी लोच नहीं है। यहां लाल रवादार पत्थर का प्रयोग हुआ है। भरहुत में यक्षी वृक्ष का आलिंगन करती या शाखा को पकड़े उकेरी गयी है। भरहुत के शिल्प से नारी आकृति की त्रिभंग मुद्रा का प्रारम्भ हुआ।

☆ **सॉंची का स्तूप**:— मध्य प्रदेश में विदिशा के पास बौद्ध धर्म का यह प्राचीन केन्द्र था। यह स्थान म० प्रदेश की राजधानी भोपाल के निकट है। यहां एक छोटी (300 फुट ऊ० पहाड़ी पर की) चोटी पर महास्तूप है। पश्चिमी ढलान पर स्तूप सं० दो तथा महास्तूप की चार दिशाओं में चार तोरण द्वार है। स्तूप सं० तीन महास्तूप की चार दिशाओं में चार तोरण द्वार है। स्तूप सं० तीन मे चार तोरणद्वार हैं तथा स्तूप सं० दो में कोई तोरण द्वार नहीं है। महास्तूप का व्यास लगभग 120 फुट है तथा ऊँचाई 54 फुट है।

पर्सी ब्राउन ने उसके निर्माण और विकास की चार अवस्थाओं का उल्लेख किया है। उनके अनुसार लगभग 250 ई०पू० में सम्राट अशोक द्वारा इस स्तूप को ईंटो से बनाया गया। उसके 100 वर्ष बाद 150 ई० पू० में इसे मूल रूप से दुगने आकार का विस्तार दिया गया तथा इसे पाषाण खण्डो की ईंटो से ढका गया। 100 ई०पू में इसके मध्य भाग में चारो ओर वेदिका बनायी गयी और लगभग 53 ई० में स्तूप के चारो ओर चार तोरण द्वार निर्मित हुए। गढे हुए पत्थर से स्तूप को ढके जाने में किसी तरह की जुड़ाई का मसाला नहीं था। भारत वर्ष में चुने के बिना की हुई चिनाई का यह पहला उदाहरण था। सॉंची की वेदिका पर कोई अलंकरण

Scanned with CamScanner

PAGE ....
DATE ..../..../....

★ साँची स्तूप के तोरण द्वार => साँची का महास्तूप अपने चार तोरण द्वारो के लिए सर्वाधिक है। चारो द्वार एक जैसे आकार के 34 फुट ऊँचे है। प्रत्येक द्वार में दो भारी स्तम्भ है। जिनके ऊपर एक-एक शीर्षक है। शीर्षको के ऊपर तीन क्षैतिज धरन है। जिनके सिरे स्तम्भ से बाहर निकले हुए तथा गोल है। तीनो धरनो के बीच स्तम्भ की सीध में चौकाईये बीच की चापाकृति धरन के बीच खडी पट्टिया है। जिनके बीच में अश्वारोही तथा गजारोही उकेरे गई। शीर्षक से धरन के बाहरी सिरे की ओर कथित झुकावदार भंगिमापूर्ण मुद्रा में सघन वृक्षो के बीच खडी शालभंजिका मूर्तिया अत्यन्त आकर्षण है। ऐसी ही शाल भंजिका मूर्तिया धरनो के बाहरी सिरो पर भी उकेरी गयी है। तोरण द्वारो के मूर्ति शिल्प के निम्न वर्गो में रखा जा सकता है।

1- बुद्ध के जीवन की चार घटनाये।
2- जातक कथाये।
3- ऐतिहासिक दृश्य।
4- देवताओं यक्ष, यक्षिणियों तथा वृक्ष का नारियों के साथ अंकन।
5- अभिप्राय व सज्जा।

बुद्ध के जीवन के चार घटनाओं में उनका जन्म सम्बोधि धर्म चक्र प्रवर्तन तथा महापार निर्वाण की प्रमुख घटनायें उकेरी है। बुद्ध के जीवन प्रतीक रूप कमल हाथी, पूर्णघट से जन्म लेते हुए पदमों को बनाया गया है। सम्बोधि (ज्ञान) का प्रतीक पीपल के पत्तो के नीचे आसन या केवल पीपल को माना गया। वाराणसी के मृगदाव के धर्मचक्र प्रवर्तन को चक्र के ऊपर रूप में दिखाया गया है। जिनमें मानवाकृतियों के साथ हिरण उत्कीर्ण किये गये है महापरि-निर्वाण का प्रतीक स्तूप है। पशु-पक्षियो को शुभ रूप में बनाया गया है। पशु वास्तविक और काल्पनिक दोनों प्रकार के है।

Scanned with CamScanner